पेसा कानून के तहत गाँव विकास नियोजन

विलेज प्रोफाइल

राजगढ़ी

गाँव - राजगढ़ी

पंचायत - डोजा

तहसील- दोवड़ा, जिला - डूंगरपुर, राजस्थान

पीस

राजगढ़ी गाँव का परिचय

राजगढ़ी गाँव डोजा ग्राम पंचायत का राजस्व गाँव है। जो कि जिला कार्यालय डूंगरपुर से 22 किलोमीटर दूर पूर्व दिशा में बसा हुआ है। डोजा पंचायत में तीन गाँव है - राजगढ़ी, डोजा और तलैया । राजगढ़ी गाँव से सटे हुए पांच गाँव है - उतर में तलेया, पूर्व में डोजा, दक्षिण में ओजरी और पश्चिम में मारगिया और हिराता । राजगढ़ी में लगभग 300 घर है और सभी एस. टी. है जो रोत उप-जाति के है । गाँव 5 फलों में विभाजित है-

1. भेड़माता फला
2. घनी घाटी फला
3. घाटी फला
4. सिदला फला
5. फुटन फला

राजगढ़ी गाँव का शिलालेख 22 साल पहले वर्ष 1998 में हो गया था और गाँव सभा का गठन भी उसी वर्ष कर दिया गया । हर माह की एक निश्चित तारीख शिलालेख स्थल के पास महुए के पेड़ के नीचे गाँव सभा आयोजित की जाती है । यहाँ शिलालेख डोजा, तलेया के साथ ही किया गया था । डूंगरपुर में पेसा कानून की जागरूकता और शिलालेख स्थापना की शुरुआत इसी पंचायत से हुई थी । स्व. बी.डी. शर्मा और वागड़ मजदूर किसान संगठन के मानसिंह जी ने पेसा कानून पर एक अभियान चला कर दोवडा ब्लॉक में शिलालेख किये थे और पेसा कानून की जानकारी गांववालों को दी थी कि अब ग्रामसभा को गांव के कामों पर पूरा अख्तियार है और इस बात की घोषणा कर दी जानी चाहिए ताकि विकास परियोजनाओं की डोर गांववालों के हाथों में रहे। लगभग हर गाँववासी को पेसा की जानकारी है ।

आज राजगढ़ी गाँव में करीब 300 घर है जिनकी आबादी लगभग 1500 है । गाँव में केवल एस. टी. रोत जाति के लोग निवास करते है । गाँव की पूरी जमीन 267 हेक्ट है गाँव में मोरन नदी बहती है जिस पर एक पुलिया बनी है । राजगढ़ी गाँव में जंगल की जमीन तो है लेकिन उसमें ज्यादातर बबूल के पेड़ और कटीली झाड़ियाँ है । जंगल पर वन विभाग का कब्ज़ा हो गया है । गाँव के जंगल, बिलानाम और चारागाह पर सरकार और वन विभाग ने अधिकार कर रखा है । संसाधनों के नाम पर गाँव में 3 मंदिर, 1 नदी, 4 नाले, 2 चेकडैम, 1 तालाब, 2 बस स्टैंड, 2 स्कूल, 1 आंगनवाड़ी, 1 राशन की दूकान, 1 सामुदायिक भवन, 1 उप-स्वास्थ्य केंद्र, 10 कुएं, 40 हैंडपंप, 45 निजी बोरवेल है । गाँव का पुलिस थाना 7 किमी दूर वरदा में है ।

आवागमन की स्थिति

राजगढ़ी गाँव जाने के लिए डूंगरपुर जिला मुख्यालय से डोजा मोड़ तक रोडवेज बस और प्राइवेट वाहन मिल जाते है डोजा मोड़ NH927A पर है जो आगे बांसवाडा जिले से गुजरता है । डोजा मोड़ से सवारी ऑटो, जीप राजगढ़ी गाँव जाने के लिए मिल जाती है, जहाँ से गाँव लगभग 3 किमी दूर है । जीप ऑटो नहीं मिलने पर लोग व्यक्तिगत साधन या पैदल ही गाँव तक जाते है । गाँव में 4 पक्की सड़क है, एक पक्की सड़क गाँव के बीच से होकर निकलती है बाकी पक्की सड़के गाँव के भीतर घाटी फला, घनीघाटी फला और फुटन फला में जाती है । गाँव में एक भी सी.सी. सड़क नहीं है । फलों में जाने के लिए 2 कच्ची सड़के और पगडण्डीयां है । गाँव के मुख्य सड़क पर बस स्टैंड है जहाँ से ऑटो, जीप तथा निजी वाहन दूसरे गाँव में जाने के लिए मिल जाते है । घरेलू खरीददारी करने के लिए 4 किमी दूर आंतरी जाना पड़ता है जहाँ खाने पीने का सामान और कपडे मिल जाते है, मुख्य बाजार डूंगरपुर 22 किमी दूर जाना पड़ता है, जहां पर सभी प्रकार की घरेलू खरीददारी के अलावा शादी-ब्याह और त्यौहारों की खरीददारी की जाती है। डूंगरपुर आने के लिए डोजा मोड़ से बस या जीप मिल जाती है । गाँव के लोग वाहन चालकों के मनमाने तरीके से किराया वसूल करने से बहुत परेशान है क्योंकि किराया बहुत ज्यादा होता है और गाड़ी के पूरा भर जाने के बाद ही चलते है जिससे अक्सर कही भी पहुचने में देरी हो जाती है । लेकिन अब गाँव के लोग इसके अभ्यस्त हो गये है ।

शिक्षा व स्वास्थय

गाँव में 2 विद्यालय है -

1. प्राथमिक विद्यालय जो घनीघाटी फला में है
2. उच्च माध्यमिक विद्यालय जो घाटी फला में है ।

प्राथमिक विद्यालय में 35 बच्चों का नामांकन है, जिसमे मात्र 1 अध्यापक की नियुक्ति है, वही स्कूल के सारे काम भी करते है । उच्च माध्यमिक विद्यालय में 405 बच्चे और 9 अध्यापक है । प्राथमिक स्कूल में छत की मरम्मत की आवश्यकता है क्योंकि बारिश में पानी टपकता है । स्कूल में खेल का मैदान तथा शौचालय में पानी की सुविधा नहीं है । अध्यापको की कमी के कारण बच्चों का नामांकन भी कम है और शिक्षा का स्तर निम्न है । उच्च माध्यमिक विद्यालय में छत से पानी टपकता है, प्लास्टर गिर रहा है और फर्श भी टूट रही है, बच्चों के बैठने के लिए पर्याप्त दरी, टेबल-कुर्सी नही है, खेल का मैदान नहीं है तथा छात्र-छात्राओ के लिए अलग-अलग शौचालय सुविधा नहीं है । दोनों विद्यालयों में पीने के शुद्ध पानी के लिए आर.ओ. नहीं लगा है । स्कूल के बाहर लगे हैंडपंप के पानी में फ्लोराइड आता है लेकिन अन्य कोई विकल्प ना होने पर बच्चे यही पानी पीते है । अध्यापक भी इस बात कों समझते है लेकिन कोई कदम नहीं उठाते है । गाँव से बहुत ही कम छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त कर पाते है । उच्च शिक्षा के लिये गाँव से 22 किमी दूर डूंगरपुर शहर में आना पड़ता है । गाँव में 1 आंगनवाडी है जिसकी हालत

अच्छी नहीं है गाँव के 5-10 बच्चे ही आते है । हर महीने द्वीतीय गुरुवार कों स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस मनाया जाता है ।

गाँव में एक उप-स्वास्थ्य केंद्र है, लेकिन समय पर दवा नहीं मिल पाती है । सरकारी अस्पताल 4 किमी दूर आंतरी गाँव में है । बडा सरकरी हॉस्पीटल 22 किमी दूर डूंगरपुर में है। हॉस्पीटल जाने के लिए टेम्पो या 108 की सुविधा है। लेकिन बहुत गंभीर मामलो में 108 मिल पाती है । पालतू जानवरों के इलाज के लिए पशु अस्पताल 04 किमी दूर आंतरी में है।

सरकारी योजनाएँ

गाँव के 250 घरों में बिजली की सुविधा है तथा गाँव में कुल 40 पेंशनधारी है, गाँव के 135 घरों को उज्जवला गैस योजना के अंतर्गत गैस कनेक्शन मिल चुका है।

कृषि और रोजगार की स्थिति

गाँव में कृषि योग्य जमीन पहाड़ी पथरीली और उबड़-खाबड़ है । खेती में मुख्यतः गेंहू, मक्का, उडद, मूंग और चना की खेती की जाती है। लेकिन खेती में उगाया गया अनाज केवल चार या पांच माह खाने तक का ही हो पाता है। यहाँ के लोग रोजगार के लिए खेती, मनरेगा में काम और मजदूरी करते है । नरेगा में गाँव की 60 प्रतिशत महिलाये जाती है क्योंकि गाँव के युवा काम के लिए दूसरे शहरों में जाते है । मनरेगा में भी पूरे 100 दिन काम नहीं मिलता है ना ही पूरी मजदूरी मिलती है । गाँव में काम नहीं मिलने पर लोग कड़िया मजदूरी करने के लिए डूंगरपुर, सागवाडा और बाँसवाड़ा जाते है और गुजरात राज्य में अहमदाबाद, मोडासा, हिम्मतनगर जाते है, जहां वे खेतों में तथा फेक्ट्री में काम करते है। राजगढ़ीगाँव से 6 लोग अलग अलग सरकारी विभागों (वन विभाग, स्वास्थ्य विभाग और शिक्षा विभाग) में कर्मचारी है ।

सिंचाई की स्थिति

गाँव में पीने के पानी और सिंचाई के पानी का संकट है क्योंकि भूमिगत जलस्तर काफी नीचे चला गया है और सतही जल संसाधन भी तेज गर्मी में जल्दी सूख जाते है । हालांकि पशुओ के पानी और सिंचाई की सुविधा के लिए गाँव 1 नदी, 4 नाले, 1 तालाब, 10 कुएं और 45 निजी बोरवेल है लेकिन मध्य ग्रीष्म ऋतु में सभी जल स्त्रोतों में पानी कम हो जाता है या अधिकतर सूख जाते है, भूजल स्तर इतना नीचे चला गया है कि बारिश के 2 माह बाद किसी भी कुए में पानी नहीं रहता है । बोरवेलों से काफी ज्यादा पानी खीच लेने से कुओं में पानी कम हो जाता है जिससे उन लोगों को समस्या हो जाती जिनके पास बोरवेल की सुविधा नहीं है ।

राजगढ़ी गाँव की विभिन्न चिन्हित समस्याओं का विवरण निम्न् प्रकार है-

प्राकृतिक संसाधनों का विघटन

गाँव में जंगल की जमीन पर वन विभाग का कब्ज़ा है और बबूल, कटीली और जहरीली झाड़िया है जिन्हें खाने से पशु बीमार और मर भी जाते है । जहां आज से 30 साल पहले जंगल काफी हरा-भरा था और सागवान, आम, बांस, महुआ और गोंद के पेड़ थे लेकिन जंगल वन विभाग के कब्जे में जाने के बाद बर्बाद हो गया है । गाँव के लोगों ने जंगल पर सामुदायिक वन दावा की फाइल लगा रखी है । गाँव के पहाड़, बिलानाम भूमि तथा चारागाह पर वन विभाग का कब्ज़ा है । छोटी पहाडियों पर लोगो ने अपने खेत और घर बना लिए है । गाँव में बड़े पहाड़ है, इन पहाड़ो में खनन नहीं किया जाता है क्योंकि उनमे किसी भी प्रकार के खनिज के उपलब्धता की जानकारी नहीं है ।

आवागमन की समस्या

राजगढ़ी गाँव में 4 पक्की सड़क है जो मुख्य सड़क से जुड़ती हुई गाँव में आती है और गाँव के अंदर से घाटी फला, घनीघाटी फला और फुटन फला में जाती है । गाँव के भीतर फलों में जाने के लिए कोई सी.सी. सड़क नहीं है केवल पगडण्डीयाँ है। राजगढ़ी बस स्टैंड से ऑटो, जीप तथा निजी वाहन दूसरे गाँव में जाने के लिए मिल जाते है । गाँव की सभी पक्की सड़के सरकारी अधिकारियों की उपेक्षा के चलते टूट गयी है न ही उसके लिए गाँव के लोग कभी पंचायत में इस समस्या को लेकर जाते है । पक्की सड़क से गिट्टी पत्थर निकले हुए है जिन पर अक्सर लोगो के दुपहिया वहाँ फिसल जाते है । गाँव के लोग खेतों और पहाडियों पर बनी पगडण्डीयों से आते जाते है । गाँव के लोग निजी सवारी वाहन चालकों के मनमाने ढंग से किराया वसूलने से भी बहुत परेशान हो रहे है ।

भूमि व जल प्रबंधन की कमी

गाँव के लोगो ने जिस जमीन पर अपने खेत-घर बना रखे है और कब्जे में कर रखा है, अधिकतर लोगों को उनके कब्जे की जमीन का खातेदारी हक और पट्टे नहीं मिले है और जिनको पट्टे मिले है उनके पास भी पूरी जमीन का पट्टा नहीं है, खातेदारी में न्यूनतम कृषि भूमि दो बीघा और अधिकतम पांच बीघा है। पूरा गाँव पहाडियो पर बसा है, इसलिये उबड़-खाबड़ खेतों को समतलीकरण करने की आवश्यकता है । गाँव में कृषि व्यवस्था पूरी तरह से बारिश पर निर्भर है, केवल बारिश के पानी से ही फसल की पैदावार हो पाती है । सिंचाई के लिए 4 नाले है जो सूखे रहते है, 1 तालाब फुटन फला में है उसमे भी पानी वर्षभर नहीं रहता है, 10 कुएं है जो मध्य ग्रीष्म ऋतू तक सूख जाते है । गाँव में 45 के करीब बोरवेल है लेकिन सभी सूखे है । हालत यह है कि अधिकतर सभी जल स्त्रोतों में पानी सूख जाता है । गाँव में 1 ही तालाब है लेकिन कीचड़ भर जाने और गहराई कम होने के कारण सालभर पानी नहीं रहता है। पहाड़ो से बहते बारिश के पानी को रोकने के लिये 2 चेकडैम बनाये गये है । गाँव में भू-जल स्तर 250 फुट से नीचे है। गाँव में 1 नदी है लेकिन पानी रोकने की कोई व्यवस्था नहीं होने से पानी

नहीं मिल पाता है । जंगल की कुछ जमीन को लोगो ने कब्जे में लेकर सागवान के पेड़ लगा रखे है जिन्हें वें घर बनाने और ईधन के रूप में काम में लेते है ।

पेयजल की समस्या

गाँव में 40 हेण्डपम्प है। जिसमें से 25 हैंडपंप पाइप में छेद और स्प्रिंग टूट जाने के कारण बन्द हो गये है । बाकी बचे हैंडपंप का पानी फ्लोराइड वाला है और साल के चार माह पानी नही रहता है । कुछ ही हैंडपंप में गर्मी के मौसम में पानी उपलब्ध रहता है। बोरवेल भी गर्मी में पानी देना बंद कर देते है । गर्मी में ना तो पीने को पानी मिल पाता है ना ही सिंचाई का पानी मिल पाता है। वर्षा के जल को संरक्षित करने के विषय की ओर हाल फिलहाल गाँव के लोगों ने कोई ध्यान नहीं दिया है।

पशुपालन संबंधित समस्या

गाँव में गाय, बैल, भैंस व बकरी पाली जाती है। चारे की कमी के कारण और पौष्टिक आहार न मिलने से गाय डेढ़ लीटर और भैस ढाई लीटर दूध देती है, इससे केवल घर के लिए ही दूध की आपूर्ति हो पाती है । चारे की कमी के साथ-साथ पशुओ की अच्छी नस्ल नहीं होना भी दूध कम देने का कारण है। गाँव में चरागाह की जमीन पर वन विभाग का कब्ज़ा है। चारागाह जमीन पहाड़ी पर होने के कारण और पानी की कमी के कारण पशुओं के लिए प्र्याप्त मात्रा में चारा भी नहीं हो पाता है। जो भी चारा बारिश के माह में होता है वह केवल चार या पांच माह ही चल पाता है उसके पश्चात खरीद कर लाना पडता है। चारे की एक पुली या गटठर सात रूपये में खरिदते है और भूसे, चारे का ट्रक 4-5 घर के लोग मिलकर न्यूनतम 18,000/- में खरीदते है ।

शिक्षा एवं स्वास्थ्य का निम्न स्तर

गाँव में पढने वाले बच्चों के लिए दो स्कूल है । प्राथमिक विद्यालय में 35 बच्चों का नामांकन है, जिसमे मात्र 1 अध्यापक की नियुक्ति है, वही स्कूल के सारे काम भी करते है । उच्च माध्यमिक विद्यालय में 405 बच्चे और 9 अध्यापक है । प्राथमिक स्कूल में छत की मरम्मत की आवश्यकता है क्योंकि बारिश में पानी टपकता है । स्कूल में खेल का मैदान तथा शौचालय में पानी की सुविधा नहीं है । अध्यापको की कमी के कारण बच्चों का नामांकन भी कम है और शिक्षा का स्तर निम्न है । उच्च माध्यमिक विद्यालय में छत से पानी टपकता है, प्लास्टर गिर रहा है और फर्श भी टूट रही है, बच्चों के बैठने के लिए पर्याप्त दरी, टेबल-कुर्सी नही है, खेल का मैदान नहीं है तथा छात्र-छात्राओ के लिए अलग-अलग शौचालय सुविधा नहीं है । दोनों विद्यालयों में पीने के शुद्ध पानी के लिए आर.ओ. नहीं लगा है । स्कूल के बाहर लगे हैंडपंप के पानी में फ्लोराइड आता है लेकिन अन्य कोई विकल्प ना होने पर बच्चे यही पानी पीते है । दोनों विद्यालयों में कक्षा-कक्षों और अध्यापकों की कमी है । विद्यालयों में अध्यापको की कमी के कारण शिक्षा का स्तर निम्न है और बहुत ही कम छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त कर पाते है । उच्च शिक्षा के लिये गाँव से 22 किमी दूर डूंगरपुर शहर जाना पड़ता है । गाँव में 1 आंगनवाडी है, उसकी छत

से बारिश का पानी अन्दर टपकता है और पीने के पानी की भी व्यवस्था नहीं है, जिस कारण लोग अपने बच्चों को वहां कम भेजते है, गाँव में उपस्वास्थ्य केन्द्र तो है लेकिन समय पर दवा नहीं मिल पाती है सरकारी अस्पताल गाँव से 4 किमी दूर आंतरी गाँव में है । बडा सरकरी हॉस्पीटल 22 किमी दूर डूंगरपुर में है। हॉस्पीटल जाने के लिए टेम्पो या 108 की सुविधा है। लेकिन बहुत गंभीर मामलो में 108 मिल पाती है ।

कृषि एवं खाद्यान्न की स्थिति

राजगढ़ी गाँव में केवल बरसात में होने वाली फसल ही मुख्यतया पैदा होती है क्योंकि गर्मी के मौसम में पानी की कमी हो जाती है। गाँव में गेहूँ, ग्वार, मक्का, उडद, तुहर, चने की खेती की जाती है । हालाँकि वहाँ पर तालाब, कुआं, बोरवेल है, लेकिन सभी जल-स्त्रोत गर्मी आते आते सूख जाते है । गाँव में भू-जल स्तर 250 फुट से भी नीचे चला गया है। वर्तमान में गाँव में लगे 40 हैंडपंप में से 25 बंद है और बाकी में मध्य गर्मी में सूख जाते है । गाँव में सिंचाई के पानी की व्यवस्था के लिये करीब 10 कुऐं, 1 तालाब है। लेकिन अधिकतर गर्मी के मौसम में सूख जाते है। *सिचाई के पर्याप्त साधन उपलब्ध होने के बावजूद पानी की कमी है क्योंकि जमीनी सतह पर उपलब्ध पानी को सही और नियंत्रित तरीके से उपयोग नहीं लिया जा रहा है, मनमाने ढंग से भूमिगत जल बोरवेल से खीच लेने के कारण वर्तमान में जमीन में पानी इतना गहराई में चला गया है और ग्रीष्म ऋतू में पानी ख़त्म हो जाता है, पानी के अत्यधिक दोहन और पानी के संरक्षण के प्रति यही उदासीनता रही तो कुछ सालों बाद गाँव में पानी का स्तर और भी अधिक गहराई तक चला जाएगा। जिसके साथ गाँव में पीने तथा कृषि के लिए पानी का बड़ा संकट उत्पन्न होने वाला है /* खेती से होने वाली उपज केवल 4 से 6 महीने ही चल पाती है, खेती से होने वाला अनाज पर्याप्त नहीं होने के कारण खरीद कर लाना पड़ता है। जिसके लिये सरकारी उचित मूल्य की दूकान गाँव में ही है । राशन की दुकान पर केवल गेहूं मिलता है । गाँव में 135 घरों में उज्जवला गैस कनेक्शन मिलने से बाकि के राशन कार्डो पर भी मिटटी का तेल मिलना बंद हो गया है । राशन दुकान पर पॉस मशीन की भी समस्या रहती है और आस-पास के दूसरे गाँवों के लोग भी आते है, जिसके कारण काफी लम्बी लाइन राशन लेने के लिये लग जाती है।

आजिविका एवं रोजगार के साधनों की कमी

गाँव में रोजगार का मुख्य साधन मनरेगा और खेती है, अन्यथा मजदूरी एक मात्र आजीविका चलाने का साधन है । गाँव के अधिकतर युवा गुजरात राज्य के अहमदाबाद, हिम्मतनगर, सूरत और मोडासा में मजदूरी करने के लिये जाते है। अच्छी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और तकनीकी ज्ञान के अभाव में लोगों के पास आजीविका का कोई अच्छा विकल्प नहीं है । गाँव में नरेगा पर काम मिलता है, जिसमें गाँव की महिलायें अधिक संख्या में जाती है वर्तमान में मनरेगा में जो मजदूरी दी जा रही है वह भी 100 रूपये से कम दी

जाती है। कुछेक लोगों को काम करने के बाद मजदूरी नहीं मिली है। जिसके लिये जवाब मांगने पर बैंक खातों के स्थानान्तरण की बात कह कर टाल दिया जाता है।

गाँव में उपलब्ध संसाधन, उनकी हालत और संभावनाएं-

संसाधन	हालत	सम्भावना
जल नदी तालाब कुआं हैण्डपम्प बोरवेल	गाँव में 1 नदी (मोरन नदी) बहती है । मोरन नदी में साल भर पानी बहता है लेकिन गर्मी में कम हो जाता है । गाँव में सिंचाई और मवेशीयों को पानी पीने के लिये 1 तालाब है लेकिन गर्मी समाप्त होने से पहले ही पानी सूख जाता है। ऐसी स्थिति में मवेशीयों के पीने के पानी की समस्या हो जाती है। गाँव में 45 निजी बोरवेल है । गर्मी में सभी बोरेवेल में भी पानी खत्म हो जाता है। गाँव के कुएं और हैंडपंप जिनमे पानी आ रहा है, उनका पानी भी फ्लोराइड युक्त है।	गाँव में नदी पर एक एनिकट बनाया जाये और तालाब को गहरा करवा कर रिंगवाल बने तो ज्यादा समय तक पानी रह सकता है और सिचाई भी पूरी हो सकती है । पहाड़ो के तेज ढलान पर चेकडैम बनाये जाये, जिससे मिटटी का कटाव नहीं होगा । एनिकट बनने से जमीनी जल का स्तर भी ऊपर उठेगा, खेतों में सिंचाई के लिए पानी की सुविधा हो सकती है । तालाब में भी पानी अधिक समय तक रुकने से गाँव में गर्मियों में पानी के संकट को दूर किया जा सकता है। गाँव में बरसात के पानी को ज्यादा से ज्यादा रोक कर, कुएं रिचार्ज करके जल स्तर ऊंचा किया जा सकता है। भूमिगत जल को बोरवेल की जगह कुओं से निकालना ताकि एकदम से भू-जल स्तर नीचे ना जाये । फ्लोराइड मुक्त पेयजल के लिए गाँव में आर.ओ. प्लांट लगवाना ।
जमीन कृषि भूमि बिलानाम भूमि चरागाह जंगल	गाँव में अधिकतर उबड़-खाबड़, पथरीली जमीन और छोटी पहाड़ियों वाली जमीन है, जिस पर केवल बरसात में होने वाली घास होती है जिसे चारे के रूप में लोग काट कर लाते हैं। खेतों में बरसात में होने वाली फसल ही पैदा होती है। गाँव के सभी प्राकृतिक संसाधनों पर सरकार और वन विभाग का कब्ज़ा है ।	गाँव की उबड़-खाबड़ जमीनों को अपना खेत अपना काम योजना के तहत समतलीकरण करके उसे उपजाऊ बनाया जा सकता है। तालाब और नदी से पाईप लाइन की व्यवस्था करके सिंचाई के पानी की कमी पूरी हो सकती है । गाँव की बेकार पड़ी जमीन को गाँवसभा के अधीन करके उसपर फलदार वृक्षारोपण भी किया जा सकता है। जिससे लोगों की आय के साधन बढ़ सकते हैं। वन भूमि को सामुदायिक करके गाँव सभा के अधीन

		करना और उसे पुनर्जीवित करके लघुवनोपज ले सकते है ।
सड़क कच्ची सड़क पक्की सड़क	गाँव की पक्की सड़क सरकारी अधिकारियों की उपेक्षा के चलते टूट गयी है । खड्डों की वजह से अक्सर दुर्घटना की आशंका रहती है । गाँव में एक भी सी.सी. सड़क नहीं है । गाँव के लोग निजी सवारी वाहन चालकों के मनमाने ढंग से किराया वसूलने से भी बहुत परेशान हो रहे है । कच्ची सड़क से लोगों को अपने घर जाने के लिए पगडण्डी है जिससे केवल पैदल ही जाया जा सकता है ।	गाँव की पक्की सड़क को पंचायत में गाँवसभा के दवारा प्रस्ताव में जुड़वाकर ठीक कराया जाये । यदि गाँव के सभी कच्चे रास्ते सी.सी. सड़क में बदले जाये तो गाँव के भीतरी इलाके में आवागमन में सुविधा होगी ।
स्कूल	गाँव में 2 स्कूल है। स्कूलों की छत से प्लास्टर भी गिर रहा है और बारिश का पानी टपकता है, खेल का मैदान और शौचालय की स्थिति सही नहीं है । स्कूलों में अध्यापको की कमी है । जिस कारण स्कूलों में बच्चो का नामांकन भी कम होता है । कक्षाओ और अध्यापको की कमी के कारण बच्चों की शिक्षा प्रभावित हो रही है । पीने के लिए बच्चे फ्लोराइड का पानी पीने को बाध्य है ।	स्कूलों में छत के ऊपर चाइना मोजिक करवाकर और प्लास्टर करवा कर अच्छा बनाया जा सकता है। इसके अलावा स्कूल के शौचालय की भी मरम्मत करवाई जा सकती है। खेल के मैदान की बाउन्ड्री बना कर सुरक्षित किया जा सकता है । पीने के पानी के लिए छोटे आर.ओ. प्लांट को लगाया जा सकता है । नए कक्षा-कक्ष का निर्माण और अध्यापकों की नियुक्ति के लिए गाँवसभा में प्रस्ताव लिया जाये और शिक्षा अधिकारी से ज्ञापन देकर वार्तालाप की जाये ।
आंगनबाड़ी केंद्र	गाँव की आंगनबाड़ी केंद्र की छत से बारिश के मौसम में पानी टपकता है और पीने के पानी तथा शौचालय की व्यवस्था नहीं है ।	छत की मरम्मत करवानी है और शौचालय बनवाना । पीने के पानी के छोटा आर.ओ. प्लांट लगवाना ताकि पास के घर वाले भी इसका उपयोग कर पाए ।

गाँव सभा द्वारा चिन्हित मुख्य समस्याएं, उनके कारण, प्रस्तावित समाधान एवं वरीयता

क्र. सं.	**समस्याएं**	**सार्वजनिक/ व्यक्तिगत**	**कारण**	**समाधान**	**तात्कालिक/ दीर्घकालिक**
1	**शिक्षा**	**सार्वजनिक**	गाँव में केवल 2 प्राथमिक	स्कूलों की छत की	**तात्कालिक**

	सम्बंधित समस्या		स्कूल है, सभी विषयों के अध्यापक नहीं है । स्कूलों में पीने के शुद्ध पानी की व्यवस्था नहीं है, छत से बारिश में पानी टपकता है और प्लास्टर भी गिर रहा है। स्कूल में खेल का मैदान और शौचालय की स्थिति सही नहीं है । स्कूलों में कक्षा कक्ष भी पूरे नहीं है । इन सभी समस्या से प्रभावित होकर बच्चों का नामांकन भी कम होता है ।	मरम्मत होनी चाहिये और अध्यापको की नियुक्ति होनी चाहिये । पीने के शुद्ध पानी की व्यवस्था के लिए आर. ओ. प्लांट लगना चाहिये, नये कक्षा कक्ष बनने चाहिये । खेल का मैदान की बाउन्ड्री बने और छात्र छात्राओं के लिए अलग अलग शौचालय बने और उनमे पानी की सुविधा होनी चाहिये ।	
2	**पेयजल की समस्या**	**सार्वजनिक**	गाँव में 10 कुएं, 40 हेण्डपम्प है, जिसमें से 25 हैंडपंप पाइप में छेद और स्प्रिंग टूट जाने के कारण बन्द हो गये है । कुछ ही हैंडपंप गर्मी के मौसम में पानी उपलब्ध कराते है। बोरवेल भी गर्मी में पानी देना बंद कर देते है । गर्मी में पीने का पानी मिल पाता है वर्षा के जल को संरक्षित करने के विषय की ओर हाल फिलहाल गाँव के लोगों ने कोई ध्यान नहीं दिया है। गाँव का जलस्तर 200 फिट से नीचे चला गया है। जितने भी पेयजल के स्त्रोत है उनके पानी में फ्लोराइड की मात्रा बहुत	जो हैंडपंप ख़राब/बंद हो गये है उनकी मरम्मत करवाना । जिन हैंडपंप में पानी कम आने लगा है उन्हें गहरा करवाना और गाँव में आर.ओ. प्लांट लगवाना ताकि फ्लोराइड मुक्त पेयजल मिल पाए । गाँव में एनिकट निर्माण करना और गाँव में बरसात के पानी को ज्यादा से ज्यादा रोक कर, कुएं रिचार्ज करके जल स्तर ऊंचा किया जा सकता है। इसके लिए गाँवसभा द्वारा बैठक में प्रस्ताव भी लिया गया है ।	**दीर्घकालिक**

			जयादा है जिस कारण लोगो को दांतो और हड्डियों से सम्बंधित बीमारियाँ हो रही है ।		
3	**कृषि संबधी समस्या**	**व्यक्तिगत / सार्वजनिक**	गाँव की कृषि योग्य उपलब्ध भूमि उबड़ खाबड़ पथरीली और पहाडियों की ढलान वाली है। सिंचाई की सुविधा भी नहीं है। सिंचाई के लिए नदी, तालाब, कुओं और बोरवेल का पानी गर्मी के मौसम में ही सूख जाता है । बरसात का पानी गाँव में रोकने के लिए 2 चेकडैम और 1 तालाब है लेकिन बोरवेल की संख्या अधिक होने के कारण पानी जल्दी ख़त्म हो जाता है ।	खेतों को गाँव सभा द्वारा प्रस्ताव लेकर अपना खेत-अपना काम योजना के अंतर्गत समतलीकरण, बारिश के पानी को रोकने के लिए खेतों की मेड़ बंदी तथा कच्चे-पक्के चेकडैम का निर्माण। गाँव के नाले में पानी रोकने की योजना। घर और खेतों में पानी को रोकने के लिए टाके (पक्के खड्डे) बनवाना । उन्नतशील खाद और बीज की व्यवस्था	**तात्कालिक**
4	**रास्ते की समस्या**	**सार्वजनिक**	गाँव में पक्की सड़क सरकारी उपेक्षा के चलते टूट गयी है लेकिन ठीक नहीं करवाई जा रही है । गाँव में सी.सी. सडको की कमी है, सिर्फ पगडंडीया ही है । रास्तो के अभाव में सबसे ज्यादा तकलीफ बुजुर्गो, महिलाओं और बच्चो को होती है । बीमार व्यक्ति को मेन रोड तक लाने में भी समस्या होती है ।	गाँवसभा कमेटियों के गठन के बाद सड़क निर्माण के प्रस्ताव लिए गए हैं, कच्ची सड़क को सी.सी. सड़क में बदलना । सड़क किनारे रोड लाइट की व्यवस्था करना । पगडंडीयों को चौड़ा करना ।	**तात्कालिक**
5	**सरकारी**	**व्यक्तिगत**	गाँव में आवास योजना में	गाँव के सबसे जरूरतमंद	**तात्कालिक**

	योजनाओं की सहीं क्रियान्विति ना होना - आवास निर्माण, पेंशन और उसके भुगतान संबधी समस्या		सबसे बड़ी समस्या यह है कि लोगों के आवास बन जाने के बाद भी पूरा भुगतान नहीं हुआ है। गाँव में जिन लोगों को आवास नहीं बने हैं उन्हें यह कारण दिया जाता है की जन गणना के दौरान उनका नाम उस लिस्ट में बी.पी.एल. की सूची में नहीं है । जो सक्षम लोग हैं उनके आवास बन गए हैं । पेंशन में समस्या यह है कि गाँव में सरकारी कागजातों में उम्र अलग-अलग होने से भी लोगों की पेंशन भी बंद है। इन सभी समस्याओं का एक बड़ा कारण सरकारी विसंगतिया और भ्रष्टाचार है ।	लोगों को आवास निर्माण हेतु आवेदन कराना और उसके लिए प्रयास करना। बकाया राशि का भुगतान तुरंत करना। जिन लोगों को पेंशन नहीं मिल रही है उनको पेंशन योजना से जोड़ना । बंद पेंशन का भुगतान तुरंत शुरू करवाना । भ्रष्ट लोगो पर कार्यवाही करते हुए मध्यस्थता से हटाना ।	
6	**काबिज भूमि पर खातेदारी का हक नहीं मिलना**	**सार्वजनिक**	लोग कई पीढ़ियों से गाँव में बसे हैं लेकिन जितनी भूमि पर वह काबिज है उसकी खातेरदारी का हक उनको नहीं मिला है। सरकार की अघोषित नीतियों के कारण राजस्व विभाग ने खातेदारी हक देना बंद कर दिया है। जिसके कारण भविष्य में उनकी जमीन आसानी से छीन जाने का संकट खड़ा हो गया है।	काबिज भूमि पर सामूहिक दावा करना। पट्टे की जमीन जिसकी पैनल्टी राजस्व विभाग ने लेना बंद कर दिया है उसे कोर्ट में जमा करना क्योंकि पेनल्टी नहीं देने से पट्टा खारिज हो जाएगा और धारा 91 के अनुसार काबिज जमीन का नियमन कराना। गाँव सभा द्वारा सबकी फाइल तैयार करके एक	**दीर्घकालिक**

				साथ राजस्व विभाग में दावे का मुकदमा करना।	
7	**जंगल पर सामुदायिक वन दावा नहीं मिलना**	**सार्वजनिक**	वर्तमान में गाँव के जंगल पर वन विभाग का कब्ज़ा है। उसमे सागवान और बबूल और कटीली झाड़ियाँ है। जंगल पर वन दावा बहुत समय पहले से कर रखा है लेकिन अभी तक अधिकार नहीं मिला है ।	जमा करायी गयी फाइल की वर्तमान स्थिति का पता करना और उसकी पैरवी करना । गाँव सभा के अधिकार में लेकर जंगल कों फिर से आबाद कर लघुवन उपज लेना ।	
8	**खाद्य सुरक्षा का पूरा लाभ नहीं मिलना**	**सार्वजनिक**	गाँव में राशन की दूकान है । अक्सर पॉस मशीन में फिंगरप्रिंट न मिलना या इन्टरनेट से कनेक्ट न होने की समस्या आती रहती है । अनाज में केवल गेहूँ दिया जाता है । मिट्टी का तेल भी नहीं मिलता है ।	राशन की दुकान पर डीलर को पाबंद कर समय पर दुकान खोलने और पूरा राशन दिलवाने और जिन लोगों को राशन नहीं मिल रहा है उनके नाम योजना में जुड़वाने के लिए गाँव सभा में प्रस्ताव लेना । मिट्टी का तेल सभी को दिलवाया जाये ।	**तात्कालिक**

संसाधन आंकलन व SWOT विश्लेषण

S- Strengths शक्तियां	W- Weakness कमजोरी	O- Opportunities अवसर	T- Threats चुनौतियां
आवागमन - कच्चे रास्ते पक्की सड़कें	गाँव में पक्की सड़क की सुविधा तो है, लेकिन बहुत टूटी हुई है। इसे ठीक कराने की मांग नहीं करना । कच्चे रास्ते को आर.सी.सी. नहीं करना और नए सी.सी. सडको की मांग नहीं करना ।	रास्ते ठीक होने से गाँव में साधन आ जा सकते हैं जिससे छोटे मोटे व्यवसाय किए जा सकते हैं। लोगों को आने जाने में समय की बचत होगी। रोड लाइट लगने से दुर्घटनाओ की संभावना कम हो जायेगी ।	पंचायत की उदासीनता और भ्रष्टाचार। समस्या को लेकर अधिक से अधिक लोगो का गाँवसभा में नहीं आना । रास्ते सम्बन्धी जमीन के विवाद को निपटाना।
भूमि	गाँव की खाली पड़ी जमीन का प्रयोग नहीं होना। सभी	खेती की जमीन की उर्वरा शक्ति को बढ़ाना। गाँव की	सभी लोगों के पास पर्याप्त जमीन का

	लोगों के पास पर्याप्त खेती की जमीन नहीं होना। जमीन का असमतल और पथरीली होना । जमीन के पट्टे ना होना । जंगल का वन विभाग का कब्ज़ा ।	सार्वजनिक खाली पड़ी जमीन पर फलदार वृक्षारोपण करवाना । वन कों गाँवसभा के अधीन करना ।	अभाव। सिंचाई का अभाव खाली पड़ी जमीन के बेहतर उपयोग की योजना का अभाव। सामुदायिक वनाधिकार दावा पत्र प्राप्त करना ।
जल नदी तालाब कुआं बोरवेल हैंड पंप	गाँव में 1 नदी है लेकिन गर्मी में पानी सूख जाने से संकट हो जाता है । तालाब, कुओं, बोरवेल को रिचार्ज करने की व्यवस्था नहीं करना। गाँव में जल की कमी ना हो इसके लिए गाँव के लोगों की जागरूकता में कमी। जल संरक्षण के बारे में गाँव वालों में जागरूकता न होना ।	पहाड़ो के तेज़ बहाव वाली ढलानों पर पक्के चेकडेम निर्माण, जल संरक्षण के लिए घरो के बाहर पक्की टंकी का निर्माण करवाना । बरसात के पानी को योजनाबद्ध तरीके से अगर रोका जाए तो गाँव में पानी के संकट को दूर किया जा सकता है और भू जल स्तर को भी ऊँचा किया जाता हैं। बोरवेल का उपयोग कम करके कुओ से पानी निकालना । ताकि जल स्तर एकदम से नीचे न जाये । गाँव सभा में इसके लिए प्रस्ताव लेना ।	पंचायत द्वारा इस चुनौती से निपटने को कोई कार्ययोजना नहीं होना। गाँव के लोगों की उदासीनता। सरकारी योजना और मौसम पर अधिक निर्भर रहना ।
आजीविका के साधन	गाँव में रोजगार के साधन का अभाव। कृषि भूमि और कृषि उत्पादन की कमी। अच्छी नस्ल के पशुओं का अभाव। तकनीकी शिक्षा और प्रशिक्षण का अभाव । मनरेगा में पूरा भुगतान नहीं होना ना ही काम की नपती की जाती है ।	गाँव में खाली पड़ी जमीन और पहाड़ियों पर वृक्षारोपण, चारागाह का अच्छा प्रबंधन, अच्छी नस्ल के पशुओं का पालन, सब्जी के खेती से आय के स्रोत बढ़ाये जा सकते हैं। घरेलू उद्योग भी किये जा सकते है। सरकार के द्वारा लघु उद्योग और अन्य कोई तकनीकी	गाँव के लोगों के पास पर्याप्त खेती की जमीन का अभाव। उन्नतशील बीज का अभाव। जमीन और पहाड़ों के बेहतर प्रबंधन की कमी।

		प्रशिक्षण दिए जाने चाहिए ।	

- **नजरिया नक्शा**

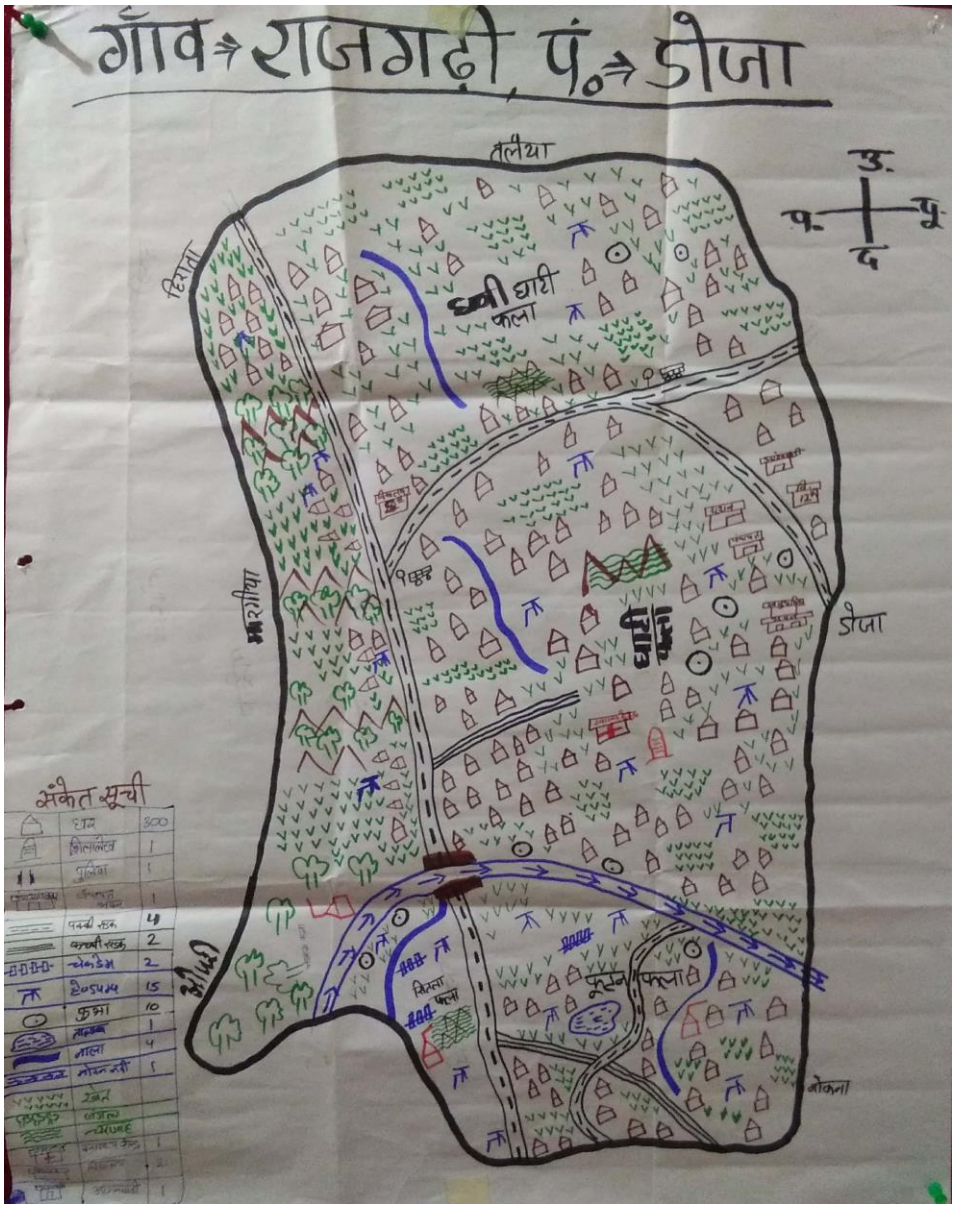

गाँवसभा द्वारा तैयार गाँव विकास योजना में प्रस्तावित कार्यो का विवरण -

प्रस्तावित कार्य	संख्या
पेंशन के सम्बन्ध में	
विधवा पेंशन	6
विकलांग पेंशन	4
नए हैंडपंप लगाने के सम्बन्ध में	16
पुराने हैंडपंप मरम्मत के सम्बन्ध में	11
कुआं गहरीकरण मरम्मत	16
नया कुआं खुदवाने के सम्बन्ध में	5
खेत समतलीकरण मय रिंगवाल के सम्बन्ध में	39
एनिकट निर्माण के संबंध में	4
सी.सी. सड़क निर्माण के संबंध में	9
पी.एम. / सी.एम. आवास निर्माण के संबंध में	17
पशुवाडा निर्माण के सम्बन्ध में	300
आर.ओ. प्लांट लगवाने के सम्बन्ध में	3
खेत तलावडी निर्माण के संबंध में	4

➢ गाँव विकास प्रस्ताव

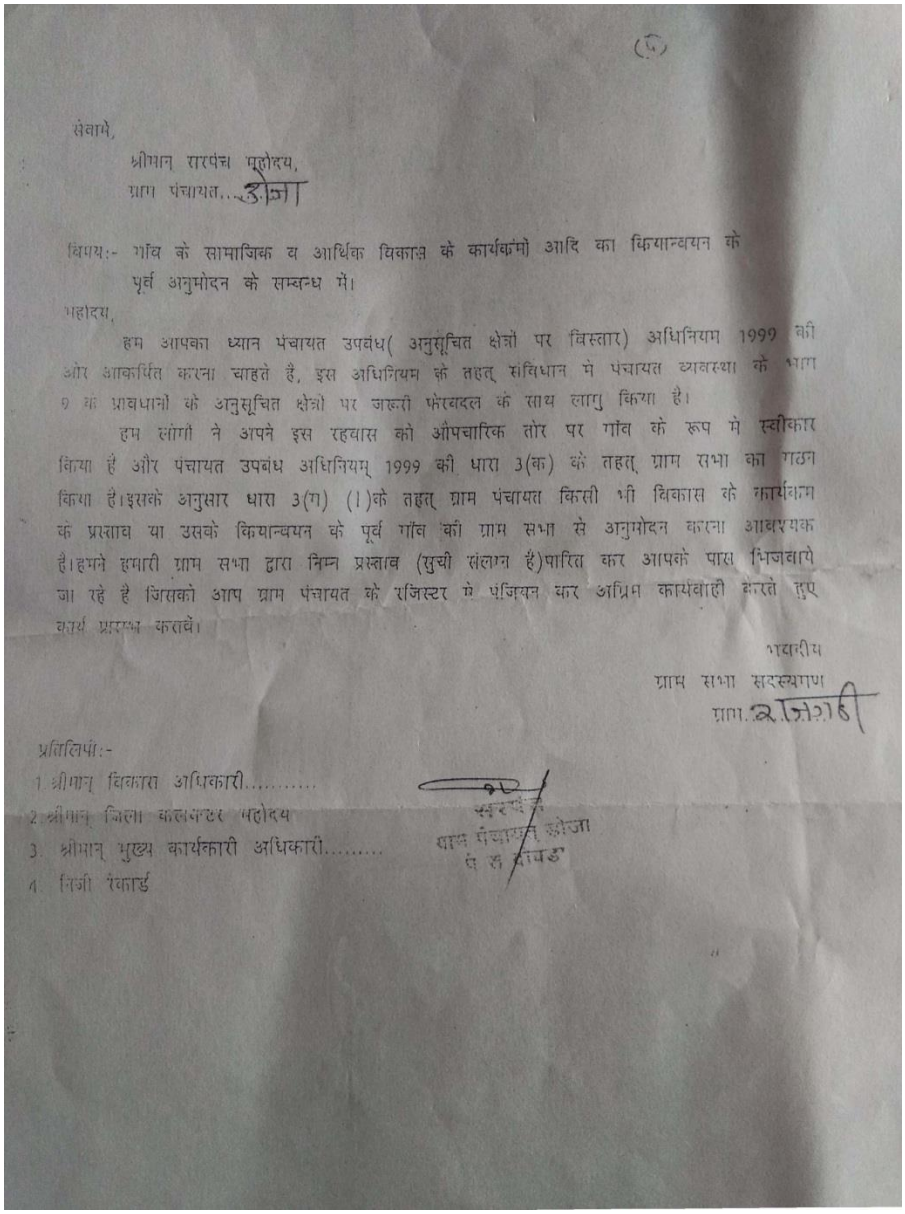

(5)

सेवामें,

श्रीमान सरपंच महोदय,
ग्राम पंचायत...डोजा

विषय:- गाँव के सामाजिक व आर्थिक विकास के कार्यक्रमों आदि का क्रियान्वयन के पूर्व अनुमोदन के सम्बन्ध में।

महोदय,

हम आपका ध्यान पंचायत उपबंध(अनुसूचित क्षेत्रों पर विस्तार) अधिनियम 1999 की ओर आकर्षित करना चाहते है, इस अधिनियम के तहत् संविधान मे पंचायत व्यवस्था के भाग 9 के प्रावधानों के अनुसूचित क्षेत्रो पर जरूरी फेरबदल के साथ लागु किया है।

हम लोगों ने अपने इस रहवास को औपचारिक तोर पर गाँव के रूप मे स्वीकार किया हैं और पंचायत उपबंध अधिनियम् 1999 की धारा 3(क) के तहत् ग्राम सभा का गठन किया है।इसके अनुसार धारा 3(ग) (1)के तहत् ग्राम पंचायत किसी भी विकास के कार्यक्रम के प्रस्ताव या उसके क्रियान्वयन के पूर्व गाँव की ग्राम सभा से अनुमोदन करना आवश्यक है।हमने हमारी ग्राम सभा द्वारा निम्न प्रस्ताव (सुची संलग्न हैं)पारित कर आपके पास भिजवाये जा रहे है जिसको आप ग्राम पंचायत के रजिस्टर मे पंजियन कर अग्रिम कार्यवाही करते हुए कार्य प्रारम्भ करावें।

भवदीय
ग्राम सभा सदस्यगण
ग्राम..........

प्रतिलिपि:-

1. श्रीमान् विकास अधिकारी...........
2. श्रीमान् जिला कलक्टर महोदय
3. श्रीमान् मुख्य कार्यकारी अधिकारी.........
4. निजी रेकार्ड

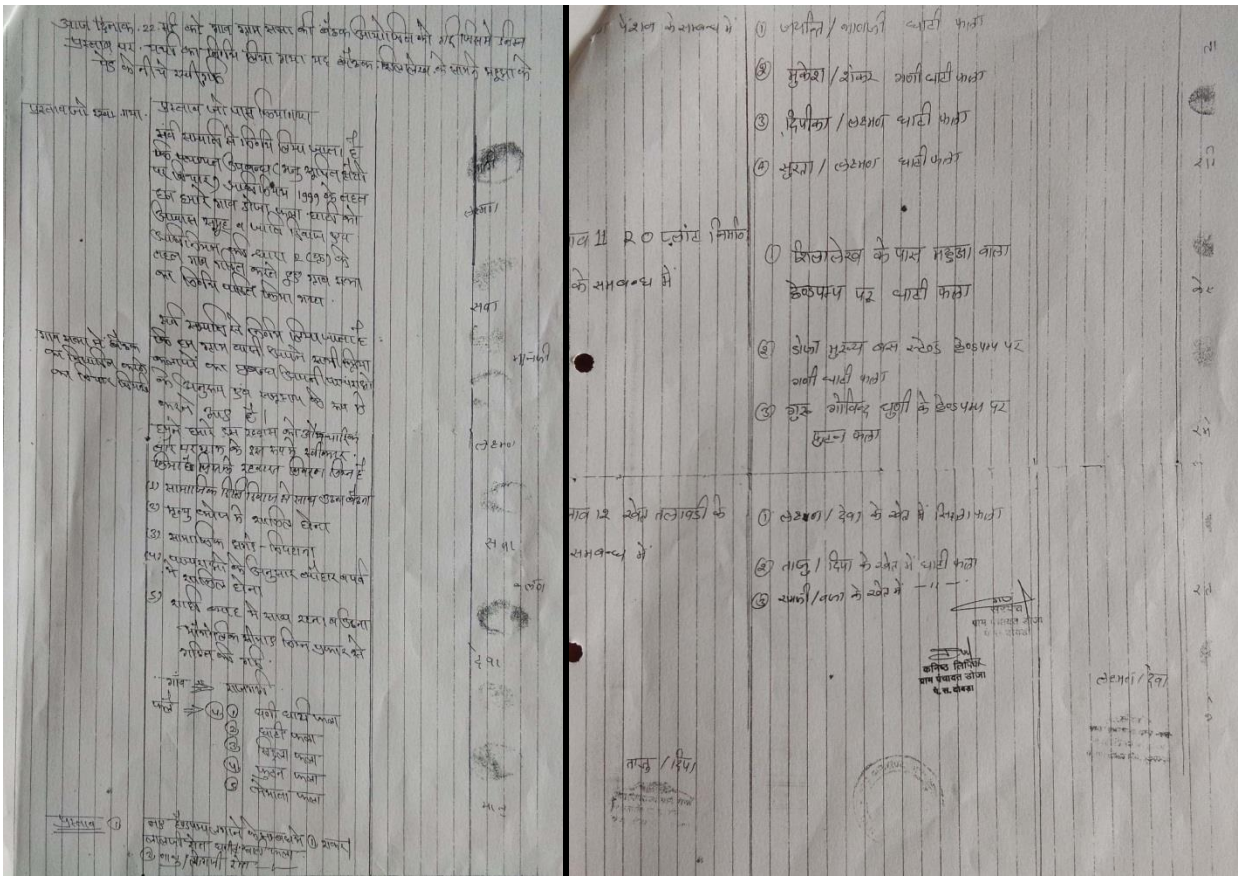

विलेज प्लैनिंग फेसिलिटेटर टीम (वीपीएफटी)

1. ताजूभाई 9521502431
2. लक्ष्मणभाई 7300357750
3. मानु रोत
4. वाली बाई रोत